International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 28-04-2026, Accepted: 29-05-2026, Published: 13-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 295-299

डॉ केशव बलिराम हेडगेवार की राष्ट्रदृष्टि और विकसित भारत /2047 का विज़न (एक अवलोकन)

तपन कुमार शांडिल्य
प्रोफेसर, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय आर्थिक, अर्थशास्त्री एवं पूर्व कुलपति, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12200

सारांश
यह शोध–आलेख डॉ केशव बलिराम हेडगेवार की राष्ट्रदृष्टि और भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'विकसित भारत /2047' के बीच सार्थक समन्वय का विश्लेषण करता है। डॉ हेडगेवार, जिन्होंने 1925 में विजयादशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना की थी, ने भारत को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से परे सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक समरसता और आर्थिक आत्मनिर्भरता के माध्यम से सशक्त राष्ट्र के रूप में देखा। उनका मूल मंत्र था – "शक्ति संगठन से आती है।" उन्होंने अनुशासित कार्यकर्ताओं (कार्यकर्ता निर्माण), दैनिक शाखा प्रणाली (जो चरित्र–निर्माण की प्रयोगशाला थी), और हिंदुत्व (जिसे उन्होंने संकीर्ण धार्मिक अर्थ में न लेते हुए व्यापक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में परिभाषित किया) पर बल दिया। हेडगेवार जी ने जातिगत विभाजन, सामाजिक विषमताओं और आर्थिक परतंत्रता को भारत की पराधीनता का मूल कारण पहचाना। उनके अनुसार, स्वदेशी व्रत, कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता और सामाजिक समरसता ही राष्ट्र के पुनर्निर्माण की आधारशिलाएँ हैं।
'विकसित भारत /2047' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नीति आयोग द्वारा प्रस्तुत वह दूरदर्शी प्रारूप है जिसका लक्ष्य स्वतंत्रता की शताब्दी (2047) तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। आर्थिक लक्ष्यों में 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था और 18,000 डॉलर प्रति व्यक्ति आय प्राप्त करना शामिल है, जिसके लिए 7–10 प्रतिशत की निरंतर विकास दर आवश्यक है। सामाजिक स्तर पर 100 प्रतिशत साक्षरता, 70 प्रतिशत महिला श्रम भागीदारी (वर्तमान 37 प्रतिशत से), 100 प्रतिशत कुशल कार्यबल, वैश्विक लैंगिक समानता में शीर्ष 10 में स्थान, 84 वर्ष की औसत जीवन प्रत्याशा, और कार्बन उत्सर्जन में 55 प्रतिशत की कमी (2005 के स्तर से) जैसे उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं। 2047 तक भारत की कामकाजी आयु की जनसंख्या लगभग 112 करोड़ होगी, जो विश्व का सबसे बड़ा कार्यबल होगा।
यह लेख सिद्ध करता है कि हेडगेवार जी के मूल सिद्धांत – संगठन शक्ति, समरसता, स्वदेशी, युवा सशक्तिकरण और कर्तव्यबोध – विकसित भारत के प्रत्येक स्तंभ में गहरे समाए हुए हैं। नीति आयोग का 'टीम इंडिया' का दृष्टिकोण हेडगेवार जी के 'संगठन में शक्ति' का ही विस्तार है। 'आत्मनिर्भर भारत', 'वोकल फॉर लोकल' और आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26 में प्रस्तावित 'स्वदेशी 2.0' हेडगेवार जी के स्वदेशी दर्शन के आधुनिक रूप हैं। सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और शून्य गरीबी के लक्ष्य उनकी 'समरसता' की परिकल्पना को साकार करने के प्रयास हैं। 112 करोड़ कार्यबल को कुशल बनाने का लक्ष्य उनके 'कार्यकर्ता निर्माण' मॉडल से प्रेरित है। निष्कर्षतः डॉ हेडगेवार की राष्ट्रदृष्टि कोई ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है जो विकसित भारत /2047 के निर्माण हेतु व्यावहारिक रूपरेखा प्रदान करती है। उनके शब्दों में – "संगठित हिंदू समाज ही भारत का पुनर्निर्माण कर सकता है" – यही विकसित भारत का मूल मंत्र है।

मूलशब्द: विकसित भारत /2047, संगठन शक्ति, सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भर भारत, कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता, युवा सशक्तिकरण, नीति आयोग, सहकारी संघवाद, वोकल फॉर लोकल, स्वदेशी 2.0, जनसांख्यिकीय लाभांश, शून्य गरीबी।

जब हम 2047 में स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष पर भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में देखने का सपना देखते हैं, तो यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि इस दृष्टि की नींव किसने रखी। भारत के राष्ट्रीय पुनर्जागरण के शिल्पकारों में से एक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे न केवल एक चिकित्सक थे, बल्कि एक ऐसे दूरदर्शी थे जिन्होंने स्वतंत्रता के अर्थ को केवल राजनीतिक स्वाधीनता तक सीमित न रखकर उसे 'राष्ट्र के पुनर्निर्माण' के रूप में देखा। उनका जन्म 1 अप्रैल 1889 को नागपुर में गुड़ी पड़वा (हिंदू नववर्ष) के दिन हुआ था।
डॉ हेडगेवार ने 1925 में विजयादशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, जिसकी प्रेरणा उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय समाज में व्याप्त विखंडन और कमजोरियों को देखकर प्राप्त की थी। उन्होंने महसूस किया कि भारत की पराधीनता का एक प्रमुख कारण हिंदू समाज में व्याप्त आपसी फूट और असंगठित अवस्था थी। यह वही अंतर्दृष्टि है जो आज 'विकसित भारत @2047' के विजन को आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता और संगठित शक्ति की आधारशिला पर खड़ा करती है।
विकसित भारत @2047 भारत सरकार की वह महत्वाकांक्षी परिकल्पना है जिसका लक्ष्य देश को 2047 तक—जब भारत स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा—एक विकसित राष्ट्र बनाना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस लक्ष्य के प्रबल प्रवर्तक रहे हैं। उनके नेतृत्व में नीति आयोग ने विकसित भारत @2047 पर विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया है। नीति आयोग के अनुसार भारत को 2047 तक 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा है, जिसकी जीडीपी वर्तमान में 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है।
इस लेख में हम डॉ हेडगेवार की राष्ट्रदृष्टि के मूलभूत स्तंभों—हिंदुत्व और राष्ट्रीय अस्मिता, सामाजिक समरसता, कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता, आत्मनिर्भरता, संगठन शक्ति और युवा सशक्तिकरण—का विश्लेषण करेंगे। साथ ही यह देखेंगे कि कैसे हेडगेवार जी की यह दूरदर्शी राष्ट्र दृष्टि विकसित भारत @2047 की आधारशिला बनती है और 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में किस प्रकार सहायक हो सकती है।

विकसित भारत @2047 का विजन: एक अवलोकन

विकसित भारत @2047 भारत सरकार की वह दूरगामी राष्ट्रीय दृष्टि है जो देश को उसके गौरवशाली अतीत और सामर्थ्यशाली वर्तमान से जोड़ते हुए 2047 तक एक समृद्ध, समावेशी और सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का संकल्प रखती है। प्रधानमंत्री ने नीति आयोग की 9वीं शासी परिषद बैठक में स्पष्ट किया कि इस वर्ष की थीम 'विकसित भारत@2047' है, जिसका केन्द्रीय फोकस भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है।

आर्थिक लक्ष्य

नीति आयोग के 'विजन फॉर विकसित भारत @2047' एप्रोच पेपर के अनुसार, भारत को 2047 तक 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य रखना चाहिए, जिसमें प्रति व्यक्ति आय 18,000 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष हो। जीडीपी को वर्तमान 3.36 ट्रिलियन डॉलर से नौ गुना बढ़ाना होगा और प्रति व्यक्ति आय वर्तमान 2,392 डॉलर से आठ गुना बढ़ानी होगी। यह लक्ष्य मध्यम–आय जाल से बचते हुए 20–30 वर्षों तक 7–10 प्रतिशत की निरंतर विकास दर बनाए रखने की मांग करता है।

मानव विकास के लक्ष्य

विकसित भारत की परिकल्पना शुद्ध आर्थिक संकेतकों से कहीं आगे तक फैली हुई है। विकसित भारत का निर्माण तीन स्तंभों—'जनसांख्यिकी, लोकतंत्र और विविधता'—पर आधारित है। सामाजिक मोर्चे पर, 2047 तक भारत का लक्ष्य है:

- 100 प्रतिशत साक्षरता दर
- 70 प्रतिशत से अधिक महिला श्रम भागीदारी (वर्तमान 37 प्रतिशत से)
- 100 प्रतिशत कुशल कार्यबल
- वैश्विक लैंगिक समानता में शीर्ष 10 में स्थान
- औसत जीवन प्रत्याशा लगभग 84 वर्ष
- कार्बन उत्सर्जन तीव्रता में 2005 के स्तर से 55 प्रतिशत की कमी

युवा शक्ति पर केन्द्रीय फोकस

विकसित भारत के विजन में युवाओं की केन्द्रीय भूमिका है। 2047 तक भारत की औसत आयु 37 वर्ष होगी, जिसमें कामकाजी आयु की जनसंख्या लगभग 112 करोड़ होगी, जो दुनिया का सबसे बड़ा कार्यबल होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट कहा है: "सबके प्रयास से ही विकसित भारत का निर्माण होना है"। सरकार ने चार प्रमुख स्तंभों—युवा, गरीब, महिलाएं और अन्नदाता—के सशक्तिकरण को केंद्र में रखा है, साथ ही प्रधानमंत्री ने छह स्तंभों—वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनना, भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुद्धार, नवाचार और प्रौद्योगिकी, हरित विकास, सामाजिक न्याय और शासन सुधार—पर विशेष बल दिया है।

राष्ट्रीय चेतना और संगठित समाज: हेडगेवार जी की राष्ट्रदृष्टि का सार

संगठन ही शक्ति है

डॉ हेडगेवार ने अपनी राष्ट्र दृष्टि का सार इन शब्दों में व्यक्त किया: "संपूर्ण समाज ऐसी सजग और संगठित स्थिति में होना चाहिए कि कोई भी हमारी शान पर बुरी नजर डालने का साहस न कर सके। यह याद रखना चाहिए, शक्ति संगठन के माध्यम से ही आती है। इसलिए हर हिंदू का कर्तव्य है कि वह हिंदू समाज को सुदृढ़ करने में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे।" उनके अनुसार, "हिंदू संस्कृति हिंदुस्तान की जीवनवायु है। यदि हिंदू संस्कृति हिंदुस्तान में ही नष्ट हो जाती है और हिंदू समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तो शेष रह गए केवल भौगोलिक ढांचे को हिंदुस्तान कहना उचित नहीं होगा। केवल भौगोलिक ढांचे से राष्ट्र का निर्माण नहीं होता।"

यह दृष्टि विकसित भारत @2047 के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। जब नीति आयोग यह कहता है कि "टीम इंडिया को एकजुट होकर योजना बनानी, कार्यान्वित करनी और सहकारी संघवाद की भावना से नीतियों को लागू करना होगा", तो यह हेडगेवार जी के 'संगठन में शक्ति' के मूल सिद्धांत का ही विस्तार है।

कार्यकर्ता निर्माण: राष्ट्र निर्माण की ईकाई

डॉ हेडगेवार की राष्ट्रदृष्टि में कार्यकर्ता निर्माण केन्द्रीय स्थान रखता है। उनका संगठनात्मक दर्शन कार्यकर्ता निर्माण (टलांजप छपतउंद के माध्यम से कार्यकर्ता निर्माण) पर केन्द्रित था। उनका मानना था कि देश की वर्तमान स्थिति तब तक नहीं बदल सकती जब तक लाखों युवा पुरुष अपना संपूर्ण जीवन इस उद्देश्य के लिए समर्पित न कर दें। युवाओं के मन को इस लक्ष्य के लिए ढालना ही संघ का सर्वोच्च लक्ष्य है।

उनकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उन्होंने एक ऐसा प्रणाली विकसित की जहाँ सामान्य मनुष्य—स्कूल और कॉलेज के शिक्षक, क्लर्क, स्नातक और आम लोग—समाज और संस्कृति के नेता के रूप में विकसित हो सके। उन्होंने किसी बड़े राजनीतिक व्यक्तित्व से समर्थन या भारी धनराशि नहीं मांगी, बल्कि आम लोगों, यहां तक कि अनाथों पर भरोसा किया। यही वह मॉडल है जो आज दुनिया के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन के रूप में विस्तारित हुआ है।

विकसित भारत के संदर्भ में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब प्रधानमंत्री मोदी "सबके प्रयास" की बात करते हैं, तो यह हेडगेवार जी के 'कार्यकर्ता–केन्द्रित' राष्ट्र निर्माण मॉडल का ही विस्तार है। 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक एक 'राष्ट्र–कार्यकर्ता' के रूप में कार्य करे।

शाखा प्रणाली: अनुशासन और चरित्र निर्माण की प्रयोगशाला

हेडगेवार जी का सबसे महत्वपूर्ण नवाचार शाखा प्रणाली थीकृएक दैनिक एक घंटे की सभा जो शारीरिक प्रशिक्षण, वैचारिक शिक्षा (बौद्धिक) और हिंदू एकता के अनुष्ठानों को संयोजित करती थी। 28 मई 1926 को नागपुर के महिते वाडा में एक मैदान में खाकी वर्दीधारी 15–20 युवाओं के एक समूह ने पहली बार अनुशासित पंक्तियों में ड्रिल का अभ्यास किया—यह भारत की सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन की राजनीतिक संस्कृति के लिए एक अपरिचित – श्य था।

शाखा में युवा शारीरिक व्यायाम, खेल, अनुशासित पंक्तियों और ड्रिल में संलग्न होते थे, जिससे उनके शरीर मजबूत होते थे और अनुशासन का विकास होता था॰ यह केवल शारीरिक अभ्यास नहीं था, बल्कि अनुशासन, आत्म–नियंत्रण, सामूहिक जीवन, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रभक्ति के संस्कार देने की एक संस्कारशाला थी।

विकसित भारत के निर्माण के लिए अनुशासित और चरित्रवान मानव संसाधन सबसे बड़ी आवश्यकता है। जब आरएसएस की शताब्दी पर कहा गया कि "डॉ हेडगेवार की दृष्टि आरएसएस के सदा बढ़ते विकास में प्रतिबिंबित होती है", तो यह इस मॉडल की सफलता को प्रमाणित करता है। 2047 के संदर्भ में हमें राष्ट्रीय स्तर पर एक समान अनुशासन–केन्द्रित मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है जो युवाओं को राष्ट्र–निर्माण हेतु तैयार कर सके।

हिंदुत्व और राष्ट्रीय अस्मितारू संकीर्णता से व्यापकता की ओर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

डॉ हेडगेवार का 'हिंदुत्व' का सिद्धांत एक व्यापक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद था। उन्होंने हिंदुत्व को एक सांस्कृतिक अस्मिता के रूप

में परिभाषित किया, न कि धार्मिक एक: पता के रूप में। जैसा कि वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत ने स्पष्ट किया है, "हिंदू राष्ट्र का अर्थ एकरूपता नहीं है; इसका अर्थ है सभ्यतागत मूल्यों में निहित एकता है"। हेडगेवार जी का मानना था कि हिंदू संस्कृति भारत की जीवनधारा है, और इस संस्कृति का संरक्षण और पोषण राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

यह दृष्टि विकसित भारत के विजन के साथ पूरी तरह मेल खाती है जो भारत को एक सभ्यतागत शक्ति के रूप में स्थापित करने की आकांक्षा रखता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि भारत को अपने ज्ञान, संस्कृति और मूल्यों के बल पर विश्व का मार्गदर्शक बनना है। हेडगेवार जी ने उसी विचार को 100 वर्ष पहले ही प्रतिपादित कर दिया था जब उन्होंने कहा था कि हिंदू संस्कृति का नाश होने पर केवल भौगोलिक ढांचा शेष नहीं रह जाता।

हिंदू समाज का संगठन

हेडगेवार जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि कट्टरपंथी मुसलमानों और अंग्रेजों का सफलतापूर्वक मुकाबला करना है, तो एकमात्र उपाय यह है कि हिंदू समाज, जो वास्तविक राष्ट्रीय समाज है, संगठित किया जाए। इसीलिए आरएसएस का जन्म एक राजनीतिक दल के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक परियोजना के रूप में हुआ। उनका यह दृष्टिकोण विकसित भारत के एक महत्वपूर्ण स्तंभ 'विविधता में एकता' का मूल आधार है।

विकसित भारत @2047 का विजन जब 'डेमोक्रेसी, डेमोग्राफी एंड डायवर्सिटी' को तीन स्तंभ बनाता है, तो यह हेडगेवार जी के इसी दर्शन का विस्तार है। एक विविधतापूर्ण राष्ट्र में एकता स्थापित करना और उसे विकास की दिशा में ले जाना ही हेडगेवार जी की राष्ट्रदृष्टि का केन्द्र बिंदु था।

सामाजिक समरसता: एकता और समानता का मॉडल

समरसता का वैचारिक आधार

डॉ हेडगेवार ने अपने समय में ही जातिगत विभाजनों और सामाजिक विषमताओं को देश की कमजोरी का मूल कारण पहचाना था। उनका मानना था कि प्रतीकात्मकता और सामाजिक 'फैबियनवाद' से समानता और सामाजिक सामंजस्य की भावना विकसित नहीं हो सकती। यह उनकी सोच में एक स्पष्ट विचलन था, जो उच्च–स्तरीय भाषणों और प्रतीकात्मक कार्यक्रमों (जैसे सह–भोजन) के दृष्टिकोण से अलग था।

उन्होंने पाया कि सामंतवाद यथास्थितिवाद की जननी थी, और सामाजिक एवं राजनीतिक अभिजात वर्ग का इससे हित जुड़ा था। इसलिए उनका दृष्टिकोण यह था कि सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारा जाना चाहिए, न कि केवल भाषणों तक सीमित रखा जाना चाहिए। यही कारण है कि संघ की शाखाएँ एक 'सामाजिक प्रयोगशाला' के रूप में कार्य करती थीं, जहाँ विभिन्न जातियों और क्षेत्रों के युवा एक साथ आते थे, साथ बैठते थे, और सामूहिक जीवन की शिक्षा लेते थे।

विकसित भारत में समरसता की प्रासंगिकता

विकसित भारत @2047 की परिकल्पना केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है; इसका लक्ष्य शून्य गरीबी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है। इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सामाजिक समरसता का होना अनिवार्य है। जब नीति आयोग महिला श्रम भागीदारी को वर्तमान 37 प्रतिशत से बढ़ाकर 70 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखता है और सभी प्रकार के लैंगिक और सामाजिक भेदभाव को समाप्त करना चाहता है, तो यह हेडगेवार जी के सामाजिक समरसता के दृष्टिकोण को ही बड़े पैमाने पर लागू करने का प्रयास है।

संघ के शताब्दी वर्ष में इस बात पर जोर दिया गया कि समाजिक समरसता (सामाजिक सद्भाव) राष्ट्रीय शक्ति का आधार है। आरएसएस ने अपने 100 वर्षों के इतिहास में यह साबित किया है कि जाति–आधारित विभाजनों को पाटकर और अछूतों का उत्थान करके ही एक समतामूलक और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

हेडगेवार जी ने स्वयं एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया—वे एक डॉक्टर थे, एक ब्राह्मण परिवार से थे, फिर भी उन्होंने दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को बिना किसी भेद के स्वयंसेवक बनाया और उन्हें अग्रणी भूमिका दी। डॉ बी.आर. अंबेडकर ने जब एक बार संघ की शाखा में इस समरसता को देखा, तो उन्होंने कहा था कि यदि समाज में इस प्रकार की समरसता आ जाए तो भारत की समस्याओं का बहुत बड़ा हिस्सा हल हो जाएगा॰विकसित भारत के निर्माण में यह सीख सबसे महत्वपूर्ण है।

स्वदेशी और आत्मनिर्भरता: आर्थिक राष्ट्रवाद की नींव

स्वदेशी का दर्शन

डॉ हेडगेवार केवल एक सामाजिक विचारक ही नहीं थे, बल्कि एक व्यावहारिक अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने देखा कि आर्थिक परतंत्रता ही सभी परतंत्रताओं की जननी है। ब्रिटिश शासन ने भारत को न केवल राजनीतिक रूप से गुलाम बनाया था, बल्कि उसके उद्योगों को नष्ट कर दिया था और उसे कच्चे माल का निर्यातक बना दिया था। उनका मानना था कि स्वदेशी व्रत और प्रबल राष्ट्रवाद ही देश को आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बना सकता है।

हेडगेवार जी की सोच थी कि केवल वस्त्रों में स्वदेशी पर्याप्त नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में—शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा और विज्ञान—आत्मनिर्भरता आवश्यक है। वे स्वयं खादी पहनते थे और अपने कार्यकर्ताओं को 'स्वदेशी' का व्रत दिलाते थे। 16 वर्ष की आयु में ही उन्होंने 'स्वदेशी बंधव' समूह के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं के विक्रय और वितरण में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

आत्मनिर्भरता से विकसित भारत तक

यह दृष्टि आज प्रधानमंत्री मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान में पूरी तरह प्रतिबिंबित होती है। हेडगेवार जी के 'स्वदेशी' दर्शन का ही विस्तारित रूप 'वोकल फॉर लोकल', 'मेक इन इंडिया', और 'स्टार्ट–अप इंडिया' जैसे कार्यक्रमों में दिखता है।

आज के संदर्भ में स्वदेशी का पुनरागमन और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26 ने 'अनुशासित स्वदेशी' की अवधारणा प्रस्तुत की है, जो एक त्रि–स्तरीय ढांचे के माध्यम से रणनीतिक स्वदेशीकरण पर जोर देता है। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, "इस परिदृश्य में, स्वदेशी अपरिहार्य और आवश्यक हो जाता है। यह बाहरी झटकों के सामने उत्पादन की निरंतरता सुनिश्चित करने और आर्थिक संप्रभुता को मजबूत करने वाली स्थायी राष्ट्रीय क्षमताओं के निर्माण के लिए एक रक्षात्मक और आक्रामक दोनों नीति साधन है"।

स्वदेशी 2.0 केवल अर्थशास्त्र नहीं है— यह 'सांस्कृतिक प्रतिबद्धता' बन गया है। जब प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी में कहा कि "हमारे घरों में प्रवेश करने वाली हर नई वस्तु स्वदेशी होनी चाहिए", तो यह हेडगेवार जी के स्वदेशी दर्शन को श्रद्धांजलि थी।

विकसित भारत @2047 के लिए 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य तभी सार्थक है जब वह आत्मनिर्भरता पर आधारित हो। आर्थिक सर्वेक्षण ने स्पष्ट किया है कि "संरक्षण उत्पादकता–वर्धक निवेश, क्षमता उन्नयन और निर्यात उन्मुखता के बिना कमजोरी पैदा करता है, न कि मजबूती"।

युवा सशक्तिकरण: हेडगेवार जी और विकसित भारत का साझा एजेंडा

डॉ हेडगेवार ने अपना अधिकांश जीवन युवाओं को राष्ट्र से जोड़ने में लगा दिया। उनका मानना था कि युवा ही किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं, यदि उन्हें सही दिशा दी जाए। उन्होंने 1925 में जब आरएसएस की स्थापना की, तब उनकी सोच थी कि देश की वर्तमान दशा तब तक नहीं बदल सकती जब तक लाखों युवा पुरुष अपना पूरा जीवन इस उद्देश्य के लिए समर्पित न कर दें।

यही सोच आज विकसित भारत @2047 के केंद्र में है। भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। 2047 तक भारत के कामकाजी आयु वर्ग की जनसंख्या लगभग 112 करोड़ होगी, जो दुनिया का सबसे बड़ा कार्यबल होगा। नीति आयोग ने 100 प्रतिशत कुशल कार्यबल बनाने का लक्ष्य रखा है। विकसित भारत का विजन युवाओं, गरीबों, महिलाओं और अन्नदाताओं को चार मूलभूत स्तंभों के रूप में रखता है। प्रधानमंत्री मोदी ने 'राष्ट्रीय युवा नीति' के माध्यम से युवाओं के कौशल विकास, रोजगार और नेतृत्व क्षमता पर बल दिया है। प्रधानमंत्री ने स्वयं संघ के कार्यकर्ता के रूप में प्रशिक्षित होने के अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा है कि "संघ ने मुझे जीना सिखाया"।

विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका केन्द्रीय है। हेडगेवार जी ने जिस तरह साधारण युवाओं को संघ की शाखाओं में राष्ट्र–निर्माता के रूप में ढाला, उसी तरह विकसित भारत का निर्माण उन युवाओं के हाथों में है जो आज कौशल विकास, स्टार्ट–अप, नवाचार और समाज सेवा के क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता: अधिकारों से परे का दृष्टिकोण

डॉ हेडगेवार का एक और महत्वपूर्ण योगदान था उनका 'कर्तव्य बोध'। वे मानते थे कि अधिकारों की बात करने से पहले कर्तव्यों का पालन आवश्यक है। उनका यह विचार विकसित भारत के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी समय–समय पर नागरिकों के कर्तव्यों पर जोर दिया है और 'हर घर तिरंगा' अभियान जैसे प्रयासों से राष्ट्रभक्ति की भावना को बढ़ावा दिया है।

विकसित भारत का निर्माण तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो। हेडगेवार जी का 'कर्तव्य बोध' आज 'सबके प्रयास' के विजन में परिवर्तित होता दिखता है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया है कि "सबके प्रयास से ही विकसित भारत का निर्माण होना है"।

संघ ने जिस प्रकार 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को स्थापित किया, वही भावना विकसित भारत के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण है। 18वीं शताब्दी में जब लोग 'गधा कहो पर हिंदू मत कहो' की स्थिति में थे, तब हेडगेवार जी ने हिंदुत्व को गौरव का विषय बनाया। उसी तरह, आज भी हमें 'भारतीय होने' और 'राष्ट्र के प्रति कर्तव्य निभाने' को गौरव का विषय बनाना होगा।

हेडगेवार जी की राष्ट्रदृष्टि और 2047 के लक्ष्यों का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ हेडगेवार के दर्शन की स्थायी प्रासंगिकता को 2047 के विकसित भारत के विभिन्न स्तंभों के साथ सीधे संबंधों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

सामाजिक समरसता बनाम सामाजिक न्याय

हेडगेवार जी ने जातिगत और सामाजिक विभाजनों को देश की कमजोरी का मूल कारण बताया। वे चाहते थे कि समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो और सभी को समान अवसर मिले। विकसित भारत @2047 सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, शून्य गरीबी और सार्वभौमिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लक्ष्य निर्धारित करता है। हेडगेवार जी का समरसता का मॉडल इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति का आधार है।

युवा सशक्तिकरण बनाम कुशल कार्यबल

हेडगेवार जी ने युवाओं को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के केंद्र में रखा और कार्यकर्ता निर्माण के माध्यम से युवाओं को अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्रभक्ति के संस्कार दिए। 2047 तक 112 करोड़ के कार्यबल को 100 प्रतिशत कुशल बनाने का लक्ष्यसीधे हेडगेवार जी के युवा–केन्द्रित दृष्टिकोण से जुड़ता है।

स्वदेशी–आत्मनिर्भरता बनाम मेक इन इंडिया

हेडगेवार जी का स्वदेशी का व्रत और आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल आज के 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान का मूल आधार है। 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्यतभी सार्थक है जब यह स्वदेशी उत्पादन, स्थानीय उद्यमिता और आत्मनिर्भरता पर आधारित हो। 'वोकल फॉर लोकल' का नारा हेडगेवार जी के स्वदेशी दर्शन का ही नवीन रूप है।

चरित्र निर्माण बनाम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

हेडगेवार जी ने चरित्र निर्माण और अनुशासन को सर्वोपरि माना। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में चरित्र निर्माण, मूल्य–आधारित शिक्षा और सर्वांगीण विकास पर जोर दिया गया है। 100 प्रतिशत साक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्यहेडगेवार जी के उस विजन को पूरा करते हैं जहाँ प्रत्येक नागरिक चरित्रवान, शिक्षित और राष्ट्र के प्रति समर्पित हो।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान बनाम वैश्विक नेतृत्व

हेडगेवार जी ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के वैश्विक पुनरुत्थान का सपना देखा था। उनका मानना था कि हिंदू संस्कृति का संरक्षण राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। विकसित भारत @2047 भारत को वैश्विक स्तर पर एक अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखता है, जो अपने ज्ञान, संस्कृति और मूल्यों के बल पर विश्व का मार्गदर्शन करे।

इस तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हेडगेवार जी ने जिन सिद्धांतों की नींव रखी—संगठन शक्ति, सामाजिक समरसता, स्वदेशी अर्थव्यवस्था, युवा सशक्तिकरण, चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान—वे आज विकसित भारत @2047 के प्रत्येक स्तंभ में गहराई से समाए हुए हैं। उनकी राष्ट्रदृष्टि एक सुदूर भविष्य की परिकल्पना मात्र नहीं थी, बल्कि व्यावहारिक कार्ययोजना थी जो स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में मार्गदर्शन कर रही है।

समकालीन चुनौतियाँ और हेडगेवार जी के समाधान

विकसित भारत @2047 के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ हैं— जलवायु परिवर्तन, भू–राजनीतिक अस्थिरता, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय, बेरोजगारी, और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद। हेडगेवार जी के सिद्धांत इन चुनौतियों का भी समाधान प्रस्तुत करते हैं।

भू–राजनीतिक अस्थिरता और स्वदेशी

आज विश्व भू–राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है। अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ, व्यापार युद्ध और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। ऐसे समय में स्वदेशी 2.0 का आह्वान और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। जैसा कि आर्थिक सर्वेक्षण ने कहा, "इस परिदृश्य में, स्वदेशी अपरिहार्य और आवश्यक हो जाता है"। हेडगेवार जी ने 100 वर्ष पहले ही देख लिया था कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के बिना राष्ट्रीय सुरक्षा अधूरी है।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ और प्रकृति के प्रति सम्मान

हेडगेवार जी ने भारतीय संस्कृति में निहित प्रकृति–पूजन की परंपरा पर बल दिया। वे मानते थे कि प्रकृति के प्रति सम्मान ही सच्ची मानवता है। विकसित भारत ने 2005 के स्तर से 55 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने और शुद्ध–शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है। यह लक्ष्य हेडगेवार जी के प्रकृति–केन्द्रित दृष्टिकोण से पूरी तरह मेल खाता है।

सांस्कृतिक उपनिवेशवाद और पहचान का संकट

आज के वैश्वीकृत युग में युवा पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होती जा रही है। हेडगेवार जी ने यह देखा था और उन्होंने हिंदू संस्कृति को पुनर्जीवित करने पर बल दिया था। उनका मानना था कि जब 1925 में यह स्थिति थी कि लोग 'गधा कहो पर हिंदू मत कहो' कहते थे, तब उन्होंने हिंदुत्व को गौरव का विषय बनाया। आज भी हमें अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करना और उसे वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करना है। विकसित भारत का विजन भारत को वैश्विक स्तर पर एक ज्ञान–शक्ति और सांस्कृतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने का है।

निष्कर्ष: एक साझा विरासत, एक साझा भविष्य

डॉ केशव बलिराम हेडगेवार की राष्ट्रदृष्टि केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है; यह एक जीवंत परंपरा है जो आज भी भारत के राष्ट्रीय पुनर्जागरण का मार्गदर्शन कर रही है। जब हम 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की बात करते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से हेडगेवार जी के उन्हीं मूल सिद्धांतों पर लौटते हैं जो उन्होंने 1925 में स्थापित किए थे:

संगठन शक्ति—नीति आयोग के 'टीम इंडिया' के दृष्टिकोण से लेकर केंद्र और राज्यों के बीच सहकारी संघवाद तक, हेडगेवार जी का यह सिद्धांत हर जगह प्रतिबिंबित होता है।

सामाजिक समरसता—विकसित भारत का शून्य गरीबी, सार्वभौमिक शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय का लक्ष्य हेडगेवार जी के उस समतामूलक समाज के सपने को साकार करने का प्रयास है।

स्वदेशी और आत्मनिर्भरता—30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्यतभी सार्थक है जब वह आत्मनिर्भरता पर आधारित हो। हेडगेवार जी का स्वदेशी का व्रत आज 'आत्मनिर्भर भारत', 'वोकल फॉर लोकल' और स्वदेशी 2.0 के रूप में प्रकट होता है।

युवा सशक्तिकरण—112 करोड़ के कार्यबल को 100 प्रतिशत कुशल बनाने का लक्ष्यहेडगेवार जी के उस दृष्टिकोण का ही विस्तार है जहाँ प्रत्येक युवा राष्ट्र–निर्माण का कार्यकर्ता होता है।

कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता—'सबके प्रयास' के मंत्र में हेडगेवार जी का वही 'कर्तव्य बोध' समाया हुआ है जहाँ अधिकारों के बजाय कर्तव्यों पर बल दिया जाता है।

हेडगेवार जी ने एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया जहाँ आध्यात्मिकता और भौतिकवाद का संतुलन है, जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक उत्तरदायित्व का समन्वय है, और जहाँ अतीत का गौरव और भविष्य की आकांक्षाएँ एक साथ पल्लवित होती हैं।

डॉ हेडगेवार की सबसे बड़ी विरासत यह है कि उन्होंने एक ऐसा संगठनात्मक ढांचा दिया जो बिना केंद्रीय नियंत्रण के, बिना राजनीतिक शक्ति के, केवल चरित्र, अनुशासन और समर्पण के बल पर अपने आप विकसित हुआ। इसी प्रकार, विकसित भारत का निर्माण भी ऊपर से थोपी गई नीतियों से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के आंतरिक परिवर्तन और सामूहिक प्रयास से होगा।

जैसा कि डॉ हेडगेवार ने कहा था, "शक्ति संगठन के माध्यम से ही आती है" । विकसित भारत का निर्माण तभी संभव है जब हम एक संगठित, अनुशासित और समर्पित राष्ट्र के रूप में कार्य करें। हेडगेवार जी ने जिस भारत का सपना देखा था—जहाँ हर नागरिक स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर और राष्ट्रभक्त हो—वही भारत 2047 में विकसित राष्ट्र के रूप में उभरेगा। यही हेडगेवार जी की राष्ट्रदृष्टि और विकसित भारत @2047 के बीच अटूट संबंध है—एक ऐसा संबंध जो अतीत के ज्ञान को भविष्य के विजन से जोड़ता है, और 100 वर्षों के अनुभव को आने वाली पीढ़ियों के सपनों में बदल देता है।

डॉ हेडगेवार के शब्दों में—"संगठित हिंदू समाज ही भारत का पुनर्निर्माण कर सकता है।" विकसित भारत का यही मूल मंत्र है।

संदर्भ सूची

1. बापट, श्रीकांत. (2017). डॉ. हेडगेवार: जीवन और दर्शन. नागपुर: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रकाशन।
2. जोशी, चंद्रशेखर. (2010). केसरी का सपना: डॉ. हेडगेवार की अनकही कहानी. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
3. केलकर, लक्ष्मी बाई. (2015). संघ के साथ मेरे अनुभव. पुणे: राष्ट्र सेविका समिति प्रकाशन।
4. कुमार, विवेक. (2018). "डॉ. अंबेडकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: एक अप्रतिम मुठभेड़।" भारतीय इतिहास और समाज, 45(2), पृ. 18–25।
5. सुंदर, 'याम. (2019). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का इतिहास (1925–1940). नागपुर: भारतीय विचार साधना प्रकाशन।
6. प्रधानमंत्री कार्यालय (PM India). (1 अप्रैल 2019). "संघ ने मुझे जीना सिखाया: पीएम मोदी।" नई दिल्ली: प्रधानमंत्री कार्यालय। (अभिगमन तिथि: 31 मई 2026)।
7. प्रधानमंत्री कार्यालय (PM India). (21 जून 2021). "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का डॉ. हेडगेवार पुण्यतिथि पर संदेश।" नई दिल्ली: प्रधानमंत्री कार्यालय। उपलब्ध: https://pmindia.gov.in
8. प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB). (13 अगस्त 2022). "'हर घर तिरंगा' अभियान: प्रधानमंत्री मोदी का संदेश।" नई दिल्ली: भारत सरकार। उपलब्ध: https://pib.gov.in।
9. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार। https://www.education.gov.in।
10. संघ शक्ति. (15 मार्च 2023). "मोहन भागवत का साक्षात्कार: संघ के निर्माण की गाथा।" https://sanghshakti.org ।
11. उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT). (2023). भारत स्टार्ट–अप रैंकिंग 2023. नई दिल्लीरू भारत सरकार। उपलब्ध https://www.startupindia.gov.in ।
12. रक्षा मंत्रालय. (2023). स्वदेशी रक्षा उत्पादन नीति की प्रगति रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
13. भारत सरकार. (2024). विकसित भारत @2047: दृष्टि और रोडमैप संबंधी आधिकारिक दस्तावेज एवं प्रेस विज्ञप्तियाँ. नई दिल्लीरू प्रेस सूचना ब्यूरो एवं नीति आयोग।
14. नीति आयोग. (2024). विकसित भारत @2047: भारत के दीर्घकालिक विकास का दृष्टिपत्र. नई दिल्ली: भारत सरकार।
15. विकिपीडिया. (2025). "केशव बलिराम हेडगेवार।" उपलब्ध: https://hi.wikipedia.org ।
16. पंचजन्य. (2024). "डॉ. हेडगेवार: जीवन, विचार और राष्ट्र निर्माण।" नई दिल्ली: पंचजन्य प्रकाशन।
17. द प्रिंट. (2026). "सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर विशेष लेख।"।
18. द ट्रिब्यून. (2024). "आरएसएस शताब्दी वर्ष और डॉ. हेडगेवार की विरासत।"।
19. द हिंदू. (2025). "विकसित भारत 2047 पर प्रधानमंत्री का वक्तव्य।"।